अध्याय – 4
विद्यालय प्रबन्धन

किसी विद्यालय में संगठनात्मक ढाँचे में प्रभावी रूप से दो परतें होती हैं। विभाग प्रमुख भी अध्यापक ही होते हैं। लाभार्थी भी दो प्रकार के हैं – स्कूल के सम्पर्क में आने वाले छात्र तथा माता–पिता जिन्होंने वास्तव में छात्र को विद्यालय में प्रवेश दिलाते समय प्रवेश आवेदन पत्र पर हस्ताक्षर किये।

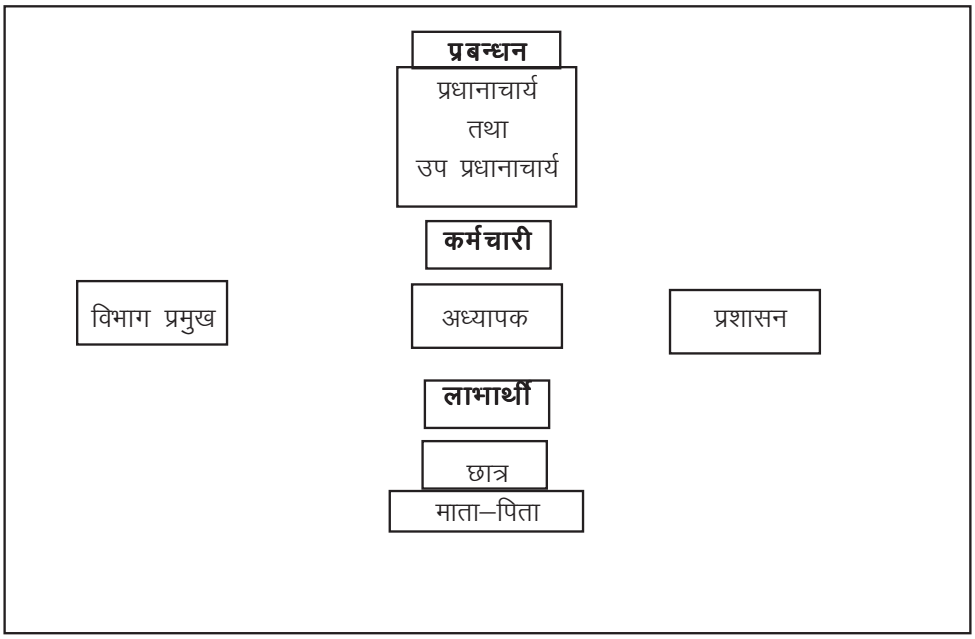

अब सफलता के मानदण्ड की बात आती है। एक अच्छे विद्यालय में अधिक फीस लेना या लाभ कमाना ही सफलता का मापदण्ड नहीं होता है। अच्छा विद्यालय छात्रों को अपने जीवन के सभी क्षेत्रों (जैसे शारीरिक, भौतिक, सामाजिक व आध्यात्मिक क्षेत्र) में प्रवीणता विकसित करता है। विद्यालय छात्रों को दूसरे कौशल सीखाने के अतिरिक्त बौद्धिक, भावनात्मक तथा नैतिक रूप से भी समृद्ध बनाता है।

अतः विद्यालय के प्रबन्धन का प्रमुख कार्य यह तय करना है कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास होने लायक वातावरण बन सके। एक अच्छे विद्यालय का प्रबन्धन अपने अध्यापकों को शिक्षण का वातावरण उपलब्ध करवाता है। वह उन्हें पूरा स्थान तथा स्वतंत्रता देता है ताकि वे अपनी सृजनात्मक प्रवृत्तियों को अपना सके। वह उन्हें होनहार छात्र गढ़ने के लिये प्रभावी बौद्धिक संसाधन उपलब्ध कराता है। इन संसाधनों के माध्यम से उनके बौद्धिक स्तर, व्यवहारगत कौशल, सामग्री संसाधनों में निखार आता है तथा वे प्रभावी रूप से छात्रों का मार्गदर्शन कर पाते हैं।

अच्छे विद्यालय ऐसे तन्त्र बनाते हैं जो सरलता से इनकी लक्ष्यपूर्ति में सहायक हो सके। ये तन्त्र अध्यापकों को भी समर्थन देते हैं तथा ध्यान रखते हैं कि खुले रचनात्मक वातावरण में केन्द्र तथा सक्षमता कहीं खो न जाये। ये शिक्षा तन्त्र प्रबन्धन द्वारा तय किये जाते हैं। प्रबन्धन विद्यालय परिवार में सभी

सदस्यों, विकास की विभिन्न व्यवस्थाओं, क्रियान्वयन तथा आंकलन में शामिल करना है।

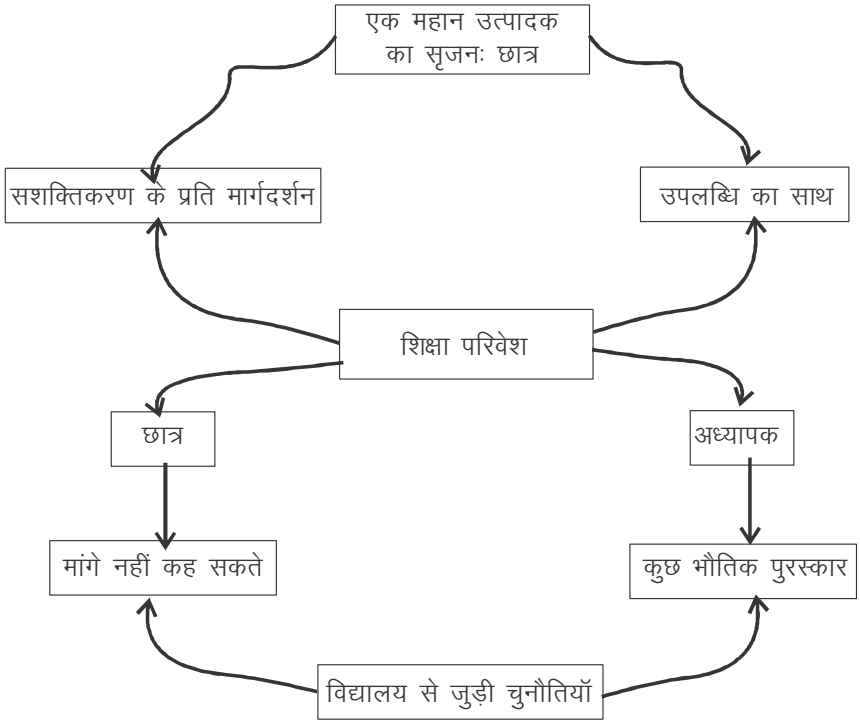

चित्रः विद्यालय एक सकारात्मक शिक्षण परिवेश बनाने में सहायक होता है।

विद्यालय में प्रबन्धन तंत्र :–

जब संसाधन सीमित हों तो, तंत्र की इन्हीं सीमित साधनों का अधिकतम उपयोग करना पड़ता है। किसी भी संगठन में समय, व्यक्ति तथा धन हमेशा सीमित होते हैं व तंत्र को उन्हें उसी रूप में संभालना होता है। तन्त्रों को यह भी ध्यान देना पड़ता है कि विद्यालय में दैनिक किये जाने वाले कामों को कम से कम प्रयासों में प्रभावी तरीके से पूरा किया जाए ताकि विद्यालय समुदाय के सभी सदस्य विद्यालय के प्राथमिक कार्य छात्रों में सीखने की योग्यताएँ विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित कर सके।

कोई भी विद्यालय समय सारणी या कैलेण्डर के बिना नहीं चल सकता। प्रत्येक तंत्र का एक लक्ष्य होना चाहिए। लक्ष्यों के साथ–साथ तंत्र भी बदलते हैं। वैकल्पिक रूप से यदि लक्ष्य प्राप्ति की प्रक्रिया पूरी न हो रही हो तो तन्त्र में भी बदलाव लाना पड़ता है। अतः कोई भी तन्त्र कठोर ढाँचे का नहीं हो सकता, वह लचीला होना चाहिए।

विद्यालय प्रबन्धन द्वारा लक्ष्यों व तंत्रों का सन्तुलन

एक अच्छे विद्यालय में निम्नलिखित लक्ष्य हो सकते हैं।

1. अच्छे व्यक्तियों का विकास करना।

2. सीमित संसाधनों में प्रबन्धन करना।
3. विद्यार्थियों को सार्वजनिक परीक्षाओं में प्रवेश के योग्य बनाना।
4. विद्यार्थियों को अच्छे महाविद्यालयों में प्रवेश योग्य बनाना।
5. विद्यार्थियों को अच्छी शैक्षिक जानकारी व विवादों की सूझ–बूझ देना।
6. गैर शैक्षिक क्षेत्रों में श्रेष्ठता विकसित करना।
7. छात्रों को अच्छा जीवन जीने के लिये तैयार करना।
8. अध्यापकों के समुदाय तक पहुँच बनाते हुए, बाहरी दुनिया से भागीदारी।

विद्यालय प्रबन्धन में छात्रों की सहभगिता :–

किसी भी विद्यालय में अध्यापक अच्छा अध्यापन एवं विद्यार्थी अच्छा अध्ययन तभी कर पायेंगे जब विद्यालय परिसर में साफ–सफाई हो, इधर–उधर कचरा बिखरा न हो, पेड़–पौधों से हरियाली हो, छोटी सी वाटिका हो, समतल व साफ सुथरा मैदान हो, विद्यालय परिसर के अन्दर व बाहर ठीक रास्ता हो।

1. वृक्षारोपण

वृक्षारोपण शब्द दो शब्दों (1) वृक्ष एवं (2) रोपण से बना है जिसका अर्थ है पेड़ पौधे लगाना। धर्मशास्त्रों में वृक्षारोपण को पुण्यदायी कार्य बताया गया है। इसका कारण यह है कि वृक्ष, धरती पर जीवन के लिये बहुत आवश्यक है। भारत वर्ष में आदिकाल से लौंग, तुलसी, पीपल, केला, बरगद आदि पेड़–पौधों को पूजते आए हैं।

वृक्षारोपण का महत्व

1. वृक्षों के महत्व का जितना गुणगान किया जाए उतना कम है।
2. वृक्ष पृथ्वी को हरा–भरा बनाये रखते हैं जिन स्थानों में पेड़–पौधे पर्याप्त संख्या में होते हैं, वहाँ निवास करना आनन्ददायी प्रतीत होता है।
3. वृक्ष जलवायु को आर्द्र व सम बनाते हैं जिससे वर्षा अधिक होने की सम्भावना बढ़ती है । वृक्षों से प्राकृतिक सौन्दर्य बढ़ता है जो पर्यटकों को आकर्षित करता है।
4. बाढ़ को रोकने, भूमि के कटाव व मरूस्थल के प्रसार को रोकने में वन सहायक होते हैं। वनों से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है क्योंकि पेड़–पौधों की पत्तियाँ सड़–गलकर खाद बनाती रहती हैं। वायुमण्डल को प्रदूषण रहित करने में भी वन सहायक होते हैं। वृक्षों से इमारती लकड़ी प्राप्त होती है जिसका उपयोग फर्नीचर निर्माण व कृषि उपकरण बनाने में किया जाता है। वृक्षों से ईंधन व उत्तम चरागाह की सुविधा मिलती है। गोंद, लाख, कत्था, कृषि उपकरण हेतु लकड़ी, रंग, कागज, व दियासिलाई उपयोग हेतु कच्चा माल प्राप्त होता है।
5. वृक्ष छाया देते हैं। वे पशु पक्षियों को आश्रय प्रदान करते हैं। इनकी ठण्डी छाया में मनुष्य एवं पशु विश्राम कर आनंदित होते हैं।
6. वृक्ष वायु के प्राकृतिक शोधक होते हैं। ये वायु में उपस्थित हानिकारक कार्बनडाई ऑक्साइड का शोधन कर लाभदायक ऑक्सीजन छोड़ते हैं। अतः धरती पर वृक्षों की पर्याप्त संख्या का होना आवश्यक है। जहाँ अधिक पेड़–पौधे होते हैं वहाँ गर्मियों में भी शीतल हवा चलती है।

व क्षों की कटाई के दुष्परिणाम :–

संतुलित पर्यावरण के लिये किसी बड़े क्षेत्र के एक तिहाई हिस्से पर वृक्षों का होना आवश्यक माना जाता है, लेकिन वर्तमान समय में वृक्ष इस अनुपात में नहीं रह गये है। इनके हानिकारक परिणाम सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहे हैं। पृथ्वी पर वनों की हरियाली घटने लगी है । बढ़ती जनसंख्या के कारण वनों की अन्धाधुंध कटाई की जा रही है। वन क्षेत्र में खनन कार्य, अत्यधिक पशुचारण, वनों को जलाकर अस्थायी कृषि करने के कारण भारत में यह क्षेत्र निरन्तर कम होता जा रहा है।

वृक्षों के संरक्षण के उपाय :–

राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार देश में 33 प्रतिशत भू भाग पर वन होने चाहिए लेकिन भारत में वन 22.7 प्रतिशत भाग पर ही है। इसलिए वनों के विकास एवं विस्तार की वर्तमान समय में प्रमुख आवश्यकता है। इस दिशा में सरकार तो अनेक प्रयत्न कर रही है लेकिन हमें भी सामाजिक एवं व्यक्तिगत स्तर पर वृक्षारोपण हेतु विशेष प्रयास करने चाहिए। वृक्षों के संरक्षण के लिये निम्न उपाय किये जाने चाहिये।

वनों की अन्धाधुंध कटाई रोकी जाये और कृषि कार्य के अतिरिक्त भूमि पर वृक्षारोपण किया जाये। तालाबों, नहरों, सडकों के किनारे, औद्योगिक क्षेत्रों, आवासीय व सरकारी परिसरों मे अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए। वृक्षों के प्रति समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर वनों को राष्ट्रीय धरोहर माना जायें। वृक्षारोपण में जन सहभागिता बढ़ायी जायें। वनों को विकसित एवं संरक्षित करने वाले विभिन्न कार्यक्रमों को अधिक से अधिक बढ़ावा दिया जाये। वन अनुसंधान कार्यों में तेजी लायी जाये तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया जायें।

वृक्षारोपण में विद्यार्थियों की सहभागिता :–

विद्यार्थी समाज में अपने क्षेत्र में वृक्षारोपण के लिये जागरूकता पैदा कर महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर एक पुण्य का कार्य कर सकते हैं। इसके लिये विद्यार्थी अपने–अपने क्षेत्र में घर–घर जाकर नागरिकों को वृक्षों की उपयोगिता बताते हुए वृक्षारोपण करने हेतु निवेदन कर सकते हैं। विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा समय–समय पर सामूहिक रैलियाँ निकालकर वृक्षारोपण हेतु जागरूक कर सकते हैं। विद्यार्थियों को स्वयं के विद्यालय परिसर में, विद्यालय की चारदीवारी के आस–पास, खेल मैदान के चारों ओर बड़े होने वाले वृक्ष लगाने चाहिए। विद्यालय भवन के पास छोटे कद के वृक्ष एवं बेलें लगाई जा सकती है। विद्यालय के मुख्य द्वार के दोनों तरफ आकर्षक फूलों वाली बेल लगानी चाहिए। विभिन्न आकार व आकृति के गमलों में फूलों के पौधे लगाने चाहिए जिससे विद्यालय परिसर आकर्षक व सकारात्मक ऊर्जा का स्थान बन सके। वृक्षारोपण को विद्यार्थी अपनी आदत बनायें। महीने का एक दिन वृक्षारोपण के लिये समर्पित करें। अपने या परिवार के किसी सदस्य के जन्म दिन पर वृक्ष लगायें। अति आवश्यक होने पर यदि किसी पेड़ को काटा जाये तो उसकी एवज में कम से कम चार पेड़ लगायें जायें। सभी विद्यार्थियों को नियमित रूप से पेड़ लगाने का संकल्प लेना चाहिए।

''आओ मिलकर पेड़ लगायें।
सब मिलकर पुण्य कमायें।''

2. स्वच्छता

स्वच्छता हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण विशय है । स्वच्छता और सफाई के बिना हम ठीक तरह से जी नहीं सकते हैं । प्रतिदिन हवा के कारण धूल उड़कर घरों व दफ्तरों में जमा होती रहती है । घरों के आसपास सफाई न होने के कारण मच्छर व कीड़े–मकौड़े पैदा हो जाते हैं जिससे ऐसे स्थान पर हमारा ज्यादा समय तक टिकने का मन नहीं करेगा । गंदगी के कारण हमें टी.बी., साँस चलने जैसी गम्भीर बीमारी हो सकती है । रास्ते में चलते समय सड़क के किनारे कूड़े का ढ़ेर व गंदगी हो तो वहाँ से निकलना मुश्किल हो जाता है । वहाँ से निकलते वक्त नाक पर कपड़ा बांधना पड़ता है । ऐसे रास्ते व सड़कों से हम लोग गुजरना पंसद नहीं करेंगे। विद्यालय में यदि कोई विद्यार्थी साफ सुथरा नहीं रहता है तथा गंदे कपड़े पहन कर रहता है तो कोई भी विद्यार्थी उसके पास बैठना पसंद नहीं करेगा । यदि विद्यार्थी साफ सुथरा रहेगा तो उसमें आत्म विश्वास बढ़ेगा और सभी लोग उसे पसंद करेंगे तथा मन में अच्छे विचार आऐंगें । अतः हमें हमेशा नहा धोकर साफ सुथरा रहना चाहिए और अपने आस–पास भी स्वच्छता रखनी चाहिए । अपने परिचितों को भी स्वच्छता रखने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए । इसे हमें अपनी आदत बनाना चाहिए क्योंकि यदि आस–पास स्वच्छता रहेगी तो हमें कोई बीमारी नहीं होगी । हमें चिकित्सक के पास या अस्पताल जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी और अपनी आर्थिक स्थिति पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

स्वच्छता के इसी मूल मंत्र को पहचान कर ''स्वच्छ भारत'' अभियान चलाया गया है । इस अभियान को स्वच्छ भारत मिशन व स्वच्छता अभियान के नाम से भी जाना जा रहा है । इस अभियान के अंतर्गत मोहल्लों, कार्यालयों, गलियों व सड़कों की अच्छी तरह साफ सफाई रखना देश के सभी घरों में शौचालयों का निर्माण, देश के बुनियादी ढांचे को बदलना आदि शामिल है । अभियान के अंतर्गत सरकार का यह प्रयास है कि कोई भी भारतवासी खुले में शौच न जाए जिससे काफी हद तक स्वच्छता स्वतः ही रहेगी।

स्वच्छता रखने की प्रत्येक भारतीय की नैतिक जिम्मेदारी है । इस देश को स्वच्छ देश बनाने के लिए प्रत्येक भारतीय नागरिक की भागीदारी अतिआवश्यक है । स्वच्छता अभियान के लक्ष्य को नियत समय में प्राप्त करने के लिए सभी विभाग एवं गणमान्य व बुद्धिजीवी लोग मन से पूर्ण उत्साह से कार्य कर रहे हैं । फिर भी यह लक्ष्य सभी नागरिकों के लिए बड़ी चुनौती है । इस लक्ष्य को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब कि भारत में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति इस जिम्मेदारी को समझेगा ।

स्वच्छता रखने में विद्यार्थियों की भूमिकाः–

भारत वर्ष को सम्पूर्ण स्वच्छ रखने में विद्यार्थी निम्न प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण सहभागिता निभा सकते हैं :–

1. विद्यार्थी को स्वयं साफ सफाई से रहने का महत्व समझना चाहिए तथा रोजाना प्रातः जल्दी उठकर दंत मंजन व स्नान करने की आदत डालनी चाहिए ।
2. कपड़े धुले हुए साफ सुथरे पहनने चाहिए ।
3. घर में साफ सफाई रखने में अपनी माताजी का सहयोग करना एवं आवश्यक हो तो स्वयं घर पर झाड़ू निकालना ।
4. घर के आस–पास गंदगी जमा न हो इसका ध्यान रखना । नियमित रूप से साफ सफाई करना।
5. विद्यालय जाते समय रास्ते में यदि गंदगी हो तो. थोड़ा कचरा होने पर विद्यार्थी उसे स्वयं रास्ते से अलग एक जगह एकत्रित कर सकते हैं तथा अधिक मात्रा में गंदगी होने पर संबन्धित

जिम्मेदार विभाग (शहरों में नगर परिषद, नगर निगम, गाँवों में ग्राम पंचायत) को शिकायती पत्र के माध्यम से कचरा हटाने हेतु आग्रह कर सकते हैं ।

6. विद्यालय में गंदगी नहीं करें (जैसे कॉपी–किताबों के पृष्ठ फाड़कर, पेंसिल छीलकर उसे कक्षा में फेंककर कचरा न करें, बल्कि उन्हें इकट्ठा करके कचरा पात्र में डालें) ।
7. कक्षा में टेबल कुर्सी, बेंचों, स्टूलों दीवारों आदि पर पेन या पेंसिल से कुछ भी न लिखें ।
8. विद्यालय परिसर में गंदगी न फैलाए । यदि कोई कूड़ा, कागज आदि नजर आए तो उसे कचरा पात्र में डालें ।
9. विद्यालय के आस–पास स्वच्छता रखने में सहयोग करें ।
10. स्वच्छता सम्बन्धी विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी अपने गाँव, मोहल्ले के व्यक्तियों को दें एवं उन्हें इनके लाभ लेने हेतु समझायें।

3. वाटिका संरक्षण

पर्यावरण को हरा–भरा और प्रदूषण मुक्त बनाए रखने में वृक्षों का महत्वपूर्ण योगदान है । एक व क्ष सौ पुत्रों से भी बढ़कर है क्योंकि वह जीवनभर अपने पालक को समान एवं निःस्वार्थ भाव से लाभ पहुँचाता रहता है। विद्यालय में पेड़ पौधे व पुष्पों वाले पौधों से युक्त वाटिका होगी तो विद्यालय में प्रवेश करते ही मन उत्साह से परिपूर्ण हो जायेगा । वाटिका में चारों तरफ छोटे पौधों की हैज लगानी चाहिए तथा जगह–जगह आकर्षक पौधे लगाने चाहिए । कुछ पौधे ऐसे होते हैं जो बिना फूल के होते हैं परन्तु उनकी पत्तियाँ ही इतनी सुन्दर होती हैं कि ये पौधे बिना फूलों के भी अच्छे लगते हैं । कुछ पौधे ऐसे होते है जिन पर पूरे वर्ष आकर्षक पुष्प लगते रहते हैं एवं कुछ पौधे ऐसे होते है जिन पर विशेष ऋतुओं में ही पुष्प खिलते हैं । वाटिका को विभिन्न प्रकार के पौधों से आवश्यकतानुसार इस तरह जमीन या गमलों में लगाने चाहिए कि वाटिका आकर्षक लगे । वाटिका में ऐसे पेड़ पौधों को महत्व दिया जाना चाहिए जिनका भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान हो । ऐसे पेड़ पौधे सौंदर्य के साथ शुभ लाभ भी देते हैं । पीपल, आँवला, तुलसी, बेल, बरगद, कमल, जामुन, बकुल, तेंदु, अशोक, कदली, शमी, कदम, गुलर, नीम आदि पेड़ पौधों को विद्यालय की वाटिका में लगाना चाहिए जिससे विद्यालय में अध्ययन व अध्यापन हेतु सकारात्मक वातावरण बन सके ।

4. कचरा प्रबन्धन

सामान्य परिचयः–

कचरा प्रबन्धन अर्थात व्यर्थ अपशिष्ट पदार्थों को उपयोग में लाने लायक बनाना । कचरे की समस्या पूरे देश में फैली है । जनसंख्या बढ़ने के साथ–साथ कचरे के बढ़ने की समस्या भी अधिक हो गई है । कचरे की मार पूरे देश को झेलनी पड़ रही है । चाहे वह गांव, शहर या कस्बा हो हर तरफ कचरा ही कचरा दिखाई देता हे । कचरा पूरे पर्यावरण को दूषित कर रहा है । कचरे के द्वारा कई तरफ के प्रदूषण उत्पन्न हो गए जो हमारे देश के लोगों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है । प्रदूषण एक ऐसा अभिशाप है जिसे सहने के लिए अधिकांश जनता मजबूर है ।

कचरा प्रबन्धन में आने वाली समस्या

1. **अनियन्त्रित जनसंख्या वृद्धि ।**
2. **तकनीकी विज्ञान ।**
3. **अनुचित व्यक्तिगत आदतें ।**

4. जागरूता की कमी ।

1. अनियन्त्रित जनसंख्या वृद्धि –

जनसंख्या वृद्धि जो देश की नहीं बल्कि पूरे विश्व की समस्या है । जनसंख्या वृद्धि के कारण लोगों को अपनी दैनिक वस्तुओं का उपयोग करने के बाद उनका परित्याग भी करना होता है । प्रत्येक व्यक्ति को जल, भोजन व वस्त्रों की आवश्यकता होती है और उनका उपयोग करके वह कुछ वस्तुओं को खुले क्षेत्रों में या आस–पास की जगहों पर फेंक देते हैं, जिससे प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो जाती है ।

2. तकनीकी विज्ञान –

विश्व में जैसे–जैसे वैज्ञानिकों ने नए–नए आवि कार करके उपकरणों का निर्माण किया है वैसे–वैसे ही कुछ वस्तुएँ ऐसी भी है जिनका उपयोग करके हम अपनी पृथ्वी को प्रदूषित कर रहे हैं । जैसे प्लास्टिक से बने विभिन्न बर्तन, थेलियाँ व अन्य सामान आदि ।

3. अनुचित व्यक्तिगत आदतें –

सब लोगों को पता होता है कि यह कचरा पर्यावरण के लिए बहुत हानिकारक है तब भी वह जानबूझ कर उन्हें कहीं भी फेंक देते है ।

अनुचित व्यक्तिगत आदतें

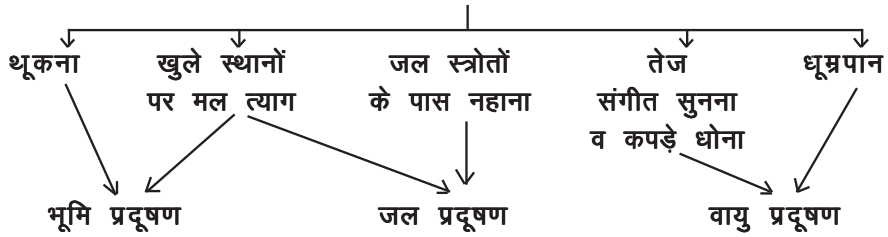

5. खेल के मैदान का संरक्षण

विद्यालय में विद्यार्थियों का सर्वांगींण विकास होना चाहिए । अध्ययन के अलावा खेलकूद व अन्य सह शैक्षणिक गतिविधियाँ (जैसे नृत्य, गायन, वाद्ययंत्र बजाना, वाद–विवाद, लेखन, अन्ताक्षरी आदि प्रतियोगिताएँ) चलती रहनी चाहिए । पढ़ाई के साथ–साथ खेलकूद भी महत्वपूर्ण है । खेलकूद से शरीर की कसरत होती है जिससे रक्त का संचार उपयुक्त तरीके से होने से शरीर में स्फूर्ति बनी रहती है तथा मन भी अच्छा रहता है । खेलकूद से हमें बीमारियाँ नहीं होती है । पुरानी कहावत है ''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन निवास करता है ।''

अतः हमें स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखना चाहिए और स्वस्थ रहने की पहली शर्त है शारीरिक मेहनत, योग, आसन, प्राणायाम एवं खेलकूद ।

खेलकूद के लिए सभी विद्यालयों में आवश्यकतानुसार खेल मैदान होता है । विद्यालय में सरकार

द्वारा खेल मैदान हेतु भूमि आवंटित कर दी जाती है और चार दीवारी भी बना दी जाती है । परन्तु स्थानीय देखभाल व संरक्षण के अभाव में चार दीवारी भी टूट जाती है तथा खेल मैदान उबड़खाबड़ हो जाते हैं और खेलने हेतु अनुपयुक्त हो जाते हैं । अतः खेल मैदानों की नियमित देखभाल होनी चाहिए । इसके लिए इनका संरक्षण आवश्यक है ।

स्थानीय स्तर पर खेल मैदान संरक्षण हेतु प्रयास

शाला प्रधान यह जांच करे कि खेल मैदान की चार दीवारी टूटी हुई तो नहीं है। यदि टूटी हुई हो तो इसकी मरम्मत हेतु प्रयास करने चाहिए । अपने विभाग से इस हेतु आवश्यक राशि आवंटित करवाने हेतु प्रयास करें । आस–पास के क्षेत्र के गाँवों, मोहल्लों के गणमान्य व्यक्तियों एवं अभिभावकों को विद्यालय में दान हेतु प्रोत्साहित कर इस तरह के भामाशाहों से धनराशि एकत्रित कर चार दीवारी व फुटबाल, वॉलीबाल, बास्केटबाल के मैदानों की मरम्मत करवानी चाहिए ।

6. रास्तों का रख रखाव व संरक्षण

सड़क परिवहनः–

सामान्य परिचयः–

परिवहन का सबसे प्राचीन साधन सड़क रहा है । यह रेल परिवहन की अपेक्षा अधिक विस्तृत एवं सुलभ साधन है । ग्रामीण अर्थ व्यवस्था तो सड़क परिवहन पर ही अधिक निर्भर है । मोटरकार के अविष्कार के बाद तो सड़क का महत्व और भी बढ़ गया है ।

सड़क परिवहन का विकासः–भारत में स्वतंत्रता के पश्चात सड़कों की लम्बाई में भारी वृद्धि हुई है । वर्तमान में देश के शहरों, नगरों व कस्बों के साथ–साथ अधिकांश गांव सड़कों से जुड़ चुके हैं ।

सड़कों का भौगोलिक वितरण –

सड़क घनत्व का आशय प्रति 10 वर्ग किमी क्षेत्र पर सड़कों की कुल लम्बाई है । विकसित देशों के मुकाबले भारत में सड़क घनत्व अभी भी बहुत कम है । सड़कों की जाल सघनता भारत के उत्तरी मैदानी भागों में ज्यादा है । इसका मुख्य कारण समतल भूमि, मुलायम मृदा एवं सघन जनसंख्या है । इन प्रदेशों में पक्की सड़कों की तुलना में कच्ची सड़कें ज्यादा प्रचलित है । भारत के प्रायद्वीपीय पठार में पक्की सड़कों का अनुपात ज्यादा है, क्योंकि सड़क निर्माण में उपयोगी वस्तुएँ आसानी से उपलब्ध हैं । भारत घनत्व का प्रतिरूप भी असमान है । तमिलनाडु, केरल, पंजाब तथा हरियाणा राज्यों में सड़क धनत्व सबसे अधिक है । इसका मुख्य कारण इन क्षेत्रों में कृषि निर्माण उद्योग, शहरीकरण का विकास एवं सघन जनसंख्या है । इसी प्रकार अधिक सड़क घनत्व वाले क्षेत्र कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्रप्रदेश उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल राज्यों में है । सामान्य सड़क घनत्व के क्षेत्र में मध्य प्रदेश, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, राजस्थान, झारखण्ड, बिहार, असम राज्यों के अन्तर्गत आते है ।

भारत में सड़कों की तीन वर्गों में रखा जाता है–

1. **राष्ट्रीय महामार्ग**
2. **राज्य महामार्ग**
3. **जिला व ग्रामीण सड़क**

1. राष्ट्रीय महामार्ग –

राष्ट्रीय महामार्ग प्रमुख मार्ग है जो देश के बड़े शहरों को जोड़ते है । इन शहरों का निर्माण, रख–रखाव, मरम्मत इत्यादि का संचालन केन्द्रीय सरकार द्वारा होता है ।

2. राज्य मार्ग–

राज्य महामार्ग राज्यों द्वारा बनाए तथा देख रेख किए जाते हैं । राज्य सड़क परिवहन विभाग, राज्य के लोक निर्माण विभाग इन सड़कों का निर्माण, रख रखाव व मरम्मत इत्यादि का संचालन करते हैं। राज्य महामार्ग राज्य की राजधानी को राज्य के सभी जिला मुख्यालयों से जोड़ते है। जिला तथा ग्रामीण सड़कें जिला मुख्यालय, छोटे कस्बों और ग्रामों को परस्पर जोड़ती हैं।

राष्ट्रीय महामार्ग विकास परियोजना (एन.एच.डी.पी.) के अन्तर्गत सड़कों का नवीन विकास –

इन परियोजना के अंतर्गत हाल ही में कई सड़कों का विकास हुआ है । भारत सरकार ने देश के आर्थिक विकास को प्रोन्नत एवं गतिमान करने के उद्देश्य से जिस परियोजना को संचालित किया है उसे ''राष्ट्रीय महामार्ग विकास कार्यक्रम'' (एन.एच.डी.पी. कहा जाता है । इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रथम दो चरणों के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा चुका है तथा अब तृतीय चरण में सुनिश्चित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में है । राष्ट्रीय महामार्ग देश के नगरों, महानगरों को जोड़ते हैं, यद्यपि इनकी कुल लम्बाई पूरी पक्की सड़कों की लम्बाई का मात्र 2 प्रतिशत ही है । किन्तु देश का 40 प्रतिशत यातायात इन्हीं राष्ट्रीय महामार्गों पर होता है ।

पक्की तथा कच्ची सड़कें:–

पक्की सड़कें सीमेन्ट व कंकरीट अथवा गिट्टी बिछाकर तारकोल (डामर) से आच्छादित कर बनाई जाती है । पक्की सड़कों पर यातायात सालभर चलता रहता है । इन पर मौसम का प्रभाव ज्यादा नहीं पड़ता है ।

कच्ची सड़कें–

कच्ची सड़कें मिट्टी से बनाई जाती हैं । इन सड़कों पर बैल गाड़ियाँ, साईकिल, ट्रेक्टर इत्यादि चला करते हैं । गाँवों को एक दूसरे से जोड़ने में तथा गाँवों को शहर से जोड़ने में भी इनका महत्वपूर्ण योगदान होता है । ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को विकसित एवं मजबूत करने में इनकी भूमिका अहम होती है । वर्षा के दिनों में कच्ची सड़कों पर यातायात अवरूद्ध हो जाता है ।

भारत में सड़क मार्गों का विकास–

रास्तों का रख रखाव:–

1. सीमा सड़क मार्गों के निर्माण, मरम्मत तथा रख रखाव का संचालन एवं नियंत्रण ''सीमा सड़क संगठन'' करता है । इन सड़क मार्गों का सामरिक एवं आर्थिक महत्व है ।
2. सड़क निर्माण में भारतीय सीमा सड़क संगठन के इंजीनियरों ने कुशलता एवं साहस का परिचय दिया । भारत की अधिकांश सीमावर्ती सड़कें उन क्षेत्रों में बनाई गई है जहाँ की जलवायु दुष्कर एवं असह्य है ।
3. जिला व ग्रामीण सड़कों का निर्माण, परिवहन संचालन, रख रखाव, मरम्मत इत्यादि का प्रबंध ा जिला

परिषद, जनपद, पंचायत, जनपद पंचायत एवं ग्राम पंचायत जैसे स्वायत्त संस्थानों द्वारा किया जाता है, जिन्हें आर्थिक सहायता राज्य कोष से उपलब्ध कराई जाती है ।

4. कम दूरी के लिए सड़क परिवहन आदर्श साधन है । रेल स्टेशनों को आन्तरिक नगरों, कस्बों, गाँवों से जोड़ने में सड़कों का महत्वपूर्ण योगदान है ।

5. रास्तों को सही ढ़ंग से रखने से देश में पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहन मिलेगा।

6. सड़क मार्गों को पहाड़ी क्षेत्रों के अधिक ढ़लान वाले भागों में भी बनाया जा सकता है। पहाड़ को बिना सुरंग बनाए घुमावदार सड़कें बनाकर उसको पार किया जा सकता है । पहाड़ी क्षेत्रों में रेल लाइन बिछाना अधिक खर्चीला तथा कठिनाई भरा होता है । सड़कों पर सुरक्षा नियमों का पालन करते हुए वाहन चलाना चाहिए ।

"मत करो इतनी मस्ती ।
जिन्दगी नहीं है सस्ती ।।"

अभ्यास प्रश्न–

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः–

प्रश्न 1 जीवन के लिए अधिक महत्व है–

अ. पेड़ों का ब. कुर्सियों का

स. गहनों का द. किसी का नहीं

प्रश्न 2 वन सहायक होते हैं–

अ. बाढ़ को रोकने में ब. भूमि के कटाव रोकने में

स. मरूस्थल के प्रसार को रोकने में द. उपरोक्त सभी

प्रश्न 3 परिवहन का सबसे प्राचीन साधन क्या है ?

अ. सड़क ब. रेल

स. बस द. वायुयान

प्रश्न 4 देश के बड़े शहरों को जोड़ने वाला राजमार्ग है–

अ. राज्य मार्ग ब. राष्ट्रीय मार्ग

स. जिला मार्ग द. ग्रामीण मार्ग

प्रश्न 5 खेल कूद से शरीर में होती है–

अ. कसरत ब. लचीलापन स. स्फूर्ति द. तीनों

प्रश्न 6 विद्यालय का प्रधान कौन होता है?

अ. प्रधानाचार्य ब. कर्मचारी

स. शिक्षक द. विद्यार्थी

प्रश्न 7 विद्यालय को उपयुक्त वातावरण देने व विद्यालय को सुचारू रूप से चलाने के लिए किन–किन सदस्यों की आवश्यकता होती है?

अ. शिक्षक ब. प्रधानाचार्य

स. विद्यार्थी द. उपरोक्त सभी

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 भारत में सड़कों को कितने वर्गों में बाँटा गया हैं ?

प्रश्न 2 भारत में कितने राष्ट्रीय राजमार्ग हैं?

प्रश्न 3 कचरा प्रबंधन क्या है ?

प्रश्न 4 स्थानीय स्तर पर खेल मैदान संरक्षण हेतु क्या प्रयास करने चाहिए ?

प्रश्न 5 भारत वर्ष को सम्पूर्ण स्वच्छ रखने में सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका किसकी है?

प्रश्न 6 भारत सरकार द्वारा ''स्वच्छ भारत अभियान'' महात्मा गाँधी की कौनसी जयन्ती पर शुरू किया गया ?

प्रश्न 7 भारत को स्वच्छ बनाये रखने के लिए क्या कदम उठाने चाहिए?

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 रास्तों के रखरखाव व संरक्षण के लिए क्या करना चाहिए?

प्रश्न 2 अनुचित व्यक्तिगत आदतें बताइए ।

प्रश्न 3 अपशिष्ट पदार्थों के पुनः प्रयोग पर लेख लिखिए ।

प्रश्न 4 विद्यालय प्रबन्धन में छात्रों की सहभागिता लिखिए। विद्यालय प्रबंधन के लक्ष्य लिखिए ।

प्रश्न 5 वृक्ष हमें क्या–क्या देते हैं?

प्रश्न 6 वृक्षों की कटाई के दुष्परिणाम लिखिए ।

प्रश्न 7 वृक्षारोपण का महत्व लिखिए ।

प्रश्न 8 वृक्षों के संरक्षण के उपाय लिखिए । वृक्षारोपण में विद्यार्थियों की क्या सहभागिता है?

उत्तरमाला (वस्तनिष्ठ प्रश्न)

1 (अ) 2 (द) 3 (अ) 4 (ब) 5 (द) 6 (अ) 7 (द)